कुमार जीवन - 77

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा को यूथ ग्रुप पर नाज़ है। देखो, दादियों को भी यूथ पर नाज़ है। दादी को प्यार है ना यूथ से। एकस्ट्रा प्यार है। कुमार हैं सुकुमार। **कुमार नहीं, सुकुमार हैं।** एक-एक कुमार विश्व के कुमारों का परिवर्तन कर दिखलाने वाले। अच्छा, कुमारों को काम दें? हिम्मत हैं? करना पडेगा। कुमारियाँ करेंगी?

➳ _ ➳ तो काम दे रहे हैं ध्यान से सुनना। तो जो अगली सीजन होगी, अगली सीजन में कुमारों का ऐसे ही स्पेशल प्रोग्राम रखेंगे लेकिन..... लेकिन भी है। ज्यादा काम नहीं देते हैं एक-एक कुमार 10-10 कुमारों का, छोटा-सा हाथ का कंगन तैयार करके लाना। हाथ में कंगन पड़ता है ना। ब्रह्मा बाप को सदैव हाथ में फूलों का कंगन डालते हैं। तो एक-एक कुमार, कच्चे-कच्चे नहीं लाना, पक्के-पक्के लाना। **तो मधुबन में तो आयें फिर घर जायें तो बदल जाएं! नहीं।** ऐसे पक्के बनाकर लाना जो बापदादा देख-देख कहे वाह कुमार वाह! ऐसे तैयार हैं? करेंगे, ऐसे? थोडा सोचो। ऐसे ही हाथ नहीं उठा लो। करना पडेगा। बनाना पडेगा। डबल फारेनर्स भी करेंगे? डबल फारेनर्स में कुमार हाथ उठाओ। तो आप भी 10 लायेंगे ना? फारेनर्स भी लायेंगे, इण्डिया वाले भी लायेंगे। फिर जो फर्स्टक्लास क्वालिटी लायेंगे उसको इनाम देंगे। इनाम बढ़िया देंगे, घटिया नहीं देंगे। प्यार है ना कुमारों से। अगर गवर्मेन्ट को ज्यादा में ज्यादा कुमार पॉजिटिव कर्म करने वाले मिल जाएं तो गवर्मेन्ट कितना खुश होगी। अगर आप 10-10 कुमार लायेंगे तो सारा हाल कुमारों से भरेंगे फिर गवर्मेन्ट को बुलायेंगे, देखो यह कुमार। लेकिन लाने पडेंगे, बनाने पडेंगे।

➳ _ ➳ **अगर अपनी स्थिति, लक्ष्य और लक्षण को समान रखेंगे तो सेवा में सफलता होगी या नहीं होगी - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। हुई पड़ी है। सिर्फ आपको निमित्त बनना पड़ेगा। यह प्रतिज्ञा सदा रिवाइज करते रहना।** कमाल तो करनी ही है। **(03-02-2002)**

➢➢ पक्के योगी अर्थात

➳ _ ➳ कर्मेन्द्रिया शीतल और शांत

→ कर्मेन्द्रियों की उत्तेजना सम्पूरण रूप से समाप्त

➳ _ ➳ सदैव स्मृति स्वरूप

→ सदैव जागरण की अवस्था

➳ _ ➳ 84 का चक्र सदैव बुधी में

→ स्वदर्शन चक्र निरंतर फिराते रहना

➳ _ ➳ किसी देहधारी के नाम रूप के आकर्षण से पूरी तरह से मुक्त

➳ _ ➳ दृष्टि और वृत्ति में कोई चंचलता नहीं

→ दृष्टि और वृत्ति को सर्व समबंधो से उस एक के साथ बाँध दो

➳ _ ➳ न्यारा और प्यारा

→ कही पर भी.. किसी भी व्यक्ति में ... किसी भी वस्तु में

- फंसेंगे नहीं
- लटकेंगे नहीं

- अटकेंगे नहीं
- चिपकेंगे नहीं

→ अनासक्त वृत्ति

→ मीठा और प्यारा बनने का कोई पुरुषार्थ नहीं किया जाता

- जो न्यारा है.. वह स्वत ही प्यारा है...
- जो मीठा और प्यारा बनने का पुरुषार्थ करेगा... वह किसी न किसी में फंस जाएगा

→ न्यारेपन (Detachment) में एक आनंद की अवस्था है

- ऐसी अवस्था जिसमें चित किसी भी देहधारी को याद नहीं करता है
- अपने स्वस्वरूप में रह
  - उस एक की याद में डूबा रहता है
    - यह स्थिति सबसे शक्तिशाली स्थिति है

➳ _ ➳ वह दुनिया में रहेंगे

→ पर दुनिया उनमे नहीं रहेगी

➳ _ ➳ एकाग्र बुधी

→ यह तो वास्तव में सारी साधनाओ का परिणाम है

➳ _ ➳ “एकांत, मौन और अंतर्मुखता” योगी का श्रृंगार है

→ और गंभीरता परिणाम के रूप में प्राप्त होगी

➳ _ ➳ सादगी योगी का श्रृंगार है

→ सादा जीवन उच्च विचार

- बने हमारा जीवन महान

➳ _ ➳ एकरस स्थिति

→ परिस्थितिया उसे प्रभावित नहीं करती

- निंदा स्तुति में समान रुपी से रहना

➳ _ ➳ साक्षी भाव

→ यह एक अभ्यास भी है

- और यह बाकी सभी साधनाओ का परिणाम भी है

➳ _ ➳ शरीर भी पूरी तरह से स्थिर रहता है

→ एक ही आसन में घंटो तक स्थिर रहता है

- दृष्टि भी पूरी तरह से स्थिर रहती है

→ अगर शरीर ही स्थिर नहीं है

- तो आतमा कैसे स्थिर रहेगी ?

→ ऐसा अनुभव हो की जैसे शरीर लॉक हो गया है

- चाहते हुए भी शरीर को हिला न सकें

- बोलना चाहें पर मुह से आवाज़ न निकले
  - ऐसा अनुभव सम्पूरण अशरीरीपन की अवस्था में होता है

→ योग करते हुए शरीर के अंगों का हिलना आंतरिक अस्थिरता की निशानी है

- चित स्थिर हो जाना चहिये एक शांत झील की तरह जिसमे कोई तरंगे नहीं